श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

✡ खिलवत ✡

किताब खिलवत गैब की
सूरत अर्ज की जो हकसों करी है

ऐसा खेल देखाइया, जो मांग लिया है हम।
अब कैसे अर्ज करूं, कहोगे मांग्या तुम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी! आपने हमें ऐसा खेल दिखाया जो हमने मांगा था। अब इससे निकलकर घर आने के लिए कैसे विनती करूं? आप कहोगे कि तुमने ही तो मांगा था।

कछु आस न राखी आसरो, ए झूठी जिमी देखाए।
ऐसी जुदागी कर दई, कछू कह्यो सुन्यो न जाए।। २ ।।

ऐसी झूठी जमीन दिखाई है कि यहां कोई आशा भी नहीं है और न यहां किसी का सहारा है। आपने इस तरह से अलग किया है कि कुछ कहा सुना भी नहीं जाता।

बैठी अंग लगाए के, ऐसी करी अन्तराए।
ना कछू नैनों देखत, ना कछू आप ओलखाए।। ३ ।।

मूल-मिलावे में हम सब सखियां अंग से अंग जोड़कर बैठी हैं, परन्तु यहां खेल में भेजकर ऐसा अन्तर हो गया है कि न कुछ आंखों से दिखाई देता है और न आपकी पहचान हो पाती है।

बैठी अंग लगाए के, ऐसी दई उलटाए।
न कछू दिल की केहे सकों, न पिया सब्द सुनाए।। ४ ।।

परमधाम में अंग से अंग जोड़कर बैठने पर भी ऐसा उल्टा दिया है कि मैं अपने दिल की बातें आपसे नहीं कर सकती और न आपके वचन ही सुनाई पड़ते हैं।

बैठी आंखें खोल के, अंग सों अंग जोड़।
आसा उपजे अर्ज को, सो भी दई मोहे तोड़।। ५ ।।

मूल-मिलावे में आंखें खोलकर अंग से अंग जोड़कर बैठी हैं। आपसे कुछ अर्ज करने की इच्छा होती भी है, उसे भी माया ने समाप्त कर दिया।

सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना तेरी जोड़।
जानो सनमंध कबूं ना हुतो, ऐसा किया बिछोड़।। ६ ।।

हे धनी! आप सदा सुख के देने वाले हैं और मैं आपकी अंगना आपका ही अंग हूं, परन्तु आपने ऐसा जुदा किया है मानो हमारा कभी आपसे नाता ही नहीं था।

Nijanand App

बैठी सदा चरन तले, कबूं न्यारी ना निमख नेस।
पाइए ना नाम ठाम दिस कहूं, ऐसा दिया विदेस।।७।।

मैं आपके चरणों के तले बैठी थी और एक पल के लिए भी कभी जुदा नहीं हुई। अब आपने ऐसे परदेश (विदेश) में भेज दिया जहां आप का नाम, धाम और दिशा भी बताने वाला कोई नहीं है।

बैठी तले कदम के, बीच डारे चौदे तबक।
दूर-दराज ऐसी करी, कहूं नजीक न पाइए हक।।८।।

मैं आपके चरणों तले बैठी हूं, परन्तु बीच में चौदह लोकों का परदा लगा है। आपने ऐसा दूर कर दिया है कि कहीं से भी आप नजदीक दिखाई नहीं पड़ते।

बैठी तले कदम के, ऐसी करी परदेसन।
ले डारी ऐसी जुदागी, रह्या हरफ न नुकता इन।।९।।

मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं, परन्तु आपने मुझे ऐसी जुदाई देकर परदेसिनी बना दिया जहां आपकी पहचान कराने वाला एक शब्द भी नहीं मिलता।

बैठी हों आगे तुम, जानूं अर्ज करूं कर जोड़।
सो उमेद कछू ना रही, कोई ऐसो दियो दिल मोड़।।१०।।

मैं आपके आगे बैठी हूं और चाहती हूं कि हाथ जोड़कर आपसे विनती कर लूं, परन्तु अब तो इतनी भी उम्मीद नहीं है। आपने इस तरह से हमारे दिल को खेल में मोड़ दिया है।

ऐसी दई उलटाय के, बैठी हों कदम के पास।
दरद न कह्यो जाय दिल को, उमेद न रही कछू आस।।११।।

मैं आपके चरणों के पास बैठी हूं। आपने मुझे ऐसा विमुख कर दिया है कि दिल के दर्द को कहने की भी आशा और उम्मीद नहीं रह गई।

बैठी तले कदम के, मेरो ए घर धाम धनी।
ए सुख देखाए जगावत, तो भी होत नहीं जागनी।।१२।।

मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं। मेरा घर परमधाम है और आप मेरे धनी हो। ऐसे अखण्ड सुख दिखाकर जगाना चाहते हो फिर भी हमारी आत्मा जागती नहीं है।

बैठी इन मेले मिने, ए घर धनी सुख अखंड।
आस न केहेन सुनन की, जानो बीच पड़्यो ब्रह्मांड।।१३।।

हे धनी! मैं इस मूल-मिलावे में बैठी हूं जहां आपके अखण्ड सुख हैं। हमारे और आपके बीच में यह माया का ब्रह्माण्ड आड़े आ गया है, जिस कारण से कहने और सुनने की आशा भी नहीं रह गई।

धनी धाम सुख बतावत, ए धनी सुख अखंड।
आप दया बतावत अपनी, आड़े दे ब्रह्मांड पिंड।।१४।।

हे मेरे धनी! माया के पिण्ड और ब्रह्माण्ड के परदे में परमधाम के अखण्ड सुख बताते हो और अपनी मेहर भी कर रहे हो।

Nijanand App

जगावत कई जुगतें, दई कई विध साख गवाहे।
बैठावत सुख अखंड में, तो भी जेहेर जिमी छोड़ी न जाए।। १५ ।।

इस तरह से यहां कई तरह से कई प्रकार की गवाही देकर, जगाकर अखण्ड सुख में बिठाते हो, फिर भी हमसे यह जहर भरा संसार नहीं छोड़ा जाता।

धनी मैं तो सूती नींद में, तुम बैठे हो जाग्रत।
खेल भी तुम देखावत, बल मेरो कछू ना चलत।। १६ ।।

धनी मैं तो फरामोशी में हूं और आप तो जाग रहे हैं। माया का खेल भी आप दिखा रहे हैं, परन्तु यहां संसार में मेरी कुछ ताकत नहीं चलती।

बल बुध न रही कछू उमेद, मेरो कोई अंग चलत नाहें।
ऐसी उरझाई इन खेल में, एक आस रही तुम माहें।। १७ ।।

हे धनी! मेरी बुद्धि, बल, आशा (उम्मीद) कुछ बाकी नहीं रही और आपकी ओर आने के लिए कोई अंग नहीं चल रहा है। आपने खेल में ऐसा उलझा दिया है कि एक आपकी आशा ही बाकी बची है।

और आसा उमेद कछू ना रही, और रख्या न कोई ठौर।
एता दृढ़ तुम कर दिया, कोई नाहीं तुम बिना और।। १८ ।।

आपके सिवाय मेरी कोई आशा (उम्मीद) नहीं रही और न आपके बिना कोई ठिकाना रह गया है। आपने इतना निश्चित कर दिया है कि आपके बिना कुछ है ही नहीं।

बल बुध आसा उमेद, ए तुम राखी तुम पर।
मुझमें मेरा कछू ना रह्या, अब क्या कहूं क्योंकर।। १९ ।।

मेरा बल, बुद्धि और आशा सब आपके अधीन हो गए हैं। मुझमें मेरा कुछ नहीं रह गया। अब क्या कहूं और आपसे कैसे कहूं?

स्यामाजीएं मोहे सुध दई, तब मैं जानी न सगाई सनमंध।
सुध धनी धाम न आपकी, ऐसी थी हिरदे की अंध।। २० ।।

श्री श्यामाजी ने आकर मुझे खबर दी, तब मैं अपने मूल सम्बन्ध को नहीं पहचान सकी और न आपकी न अपने घर की सुध रही, ऐसी हृदय की अन्धी थी।

तब जानों इन बात की, कोई देवे दूजा साख।
सो हलके हलके देत गए, मैं साख पाई कई लाख।। २१ ।।

तब मैंने सोचा कि इस बात की कोई दूसरा भी गवाही दे, तो आप धीरे-धीरे गवाहियां देते गए और मुझे लाखों गवाहियां मिल गईं।

मैं हुती बीच लड़कपने, तब कछुए न समझी बात।
मोहे सब कही सुध धाम की, भेख बदल आए साख्यात।। २२ ।।

मुझमें पहले बचपना था उस समय मैं कुछ समझ नहीं सकी। आप भेष बदलकर साक्षात् आए और परमधाम की सारी हकीकत की सुध दी।

Nijanand App

सोई वचन मेरे धनीय के, हाथ कुंजी आई दिल को।
उरझन सारे ब्रह्मांड के, मैं सुरझाऊं इन सों।। २३ ।।

मेरे धाम धनी ने अपने मीठे वचनों से समझाकर तारतम की कुंजी मेरे हाथ में दी। सारे ब्रह्माण्ड की उलझनें मैं इस तारतम वाणी से सुलझाती हूं।

पेहेले पाल न सकी सगाई, ना कर सकी पेहेचान।
पर हम बीच खेल के, कई पाए धनी धाम निसान।। २४ ।।

पहले (श्री देवचन्द्रजी के तन में) मैं पहचान न सकी और न मूल सम्बन्ध को ही निभा सकी, परन्तु अब खेल में धाम धनी की गवाहियां धर्मग्रन्थों से पा ली हैं।

कई साखें बीच कागदों, मुझ पर आया फुरमान।
इनमें इसारतें रमूजें, सो मैं ही पाऊं पेहेचान।। २५ ।।

कई धर्मशास्त्रों में भी गवाहियां लिखी हैं। कुरान भी मेरे वास्ते आया जिसमें आपने सभी गुप्त बातों के छिपे रहस्य लिखे हैं। उनको मैं ही पहचान सकती हूं।

मेरे धनी की इसारतें, कोई और न सके खोल।
सो भी आतम ने यों जानिया, ए जो स्यामाजी कहे थे बोल।। २६ ।।

मेरे धनी की गुझ (गुह्य) बातों की इशारतों को कोई और नहीं खोल सकता। मेरी आत्मा ने यह जान लिया है, क्योंकि ऐसे वचन श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी महाराज) ने भी कहे थे कि सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों का रहस्य तुझसे खुलेगा।

ए सुध हुई त्रैलोक को, सबों जान्या इनों घर धाम।
मोहे बैठाए बीच दुनी के, दिया ऐसा सुख आराम।। २७ ।।

अब चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को ज्ञान हो गया है कि मेरा घर अखण्ड परमधाम है और आपने मुझे दुनियां के बीच बिठाकर ऐसा मान का सुख दिया।

सो बातें मैं केती कहूं, मैं पाई बेसुमार।
पर एक बात न सुनाई मुख की, अजूं न कछू देत दीदार।। २८ ।।

अब इन बातों को मैं कहां तक कहूं? मुझे यहां बेशुमार गवाहियां मिल गई हैं, परन्तु आपने अपने मुखारबिन्द से एक बार भी कोई बात नहीं की और न आप सामने ही आते हो।

अब ऐसा दिल में आवत, जेता कोई थिर चर।
सब केहेसी प्रेम धनीय का, कछू बोले ना इन बिगर।। २९ ।।

अब मेरे दिल में ऐसा आता है कि जितने भी यहां चर व अचर प्राणी हैं वह सब आपके प्रेम के गुणों का गान करें और इसके बिना संसार में और कुछ न बोलें।

ऐसा आगूं होएसी, आतम नजरों भी आवत।
जानों बात सुनों मैं धनीय की, पर मोहे अजूं बिलखावत।। ३० ।।

ऐसा आगे होने वाला है और मेरी आत्मा भी गवाही देती है कि मैं धनी की बातें सुनूंगी, परन्तु धनी मुझे अभी भी बिलखा रहे हैं।

Nijanand App

ना कछू देखूं दरसन, ना कछू केहेने की आस।
ना कछू सुध सनमंध की, बैठी हों कदम के पास।। ३१ ।।

न मैं आपके दर्शन कर सकती हूं और न कुछ कहने की हिम्मत ही पड़ती है। न मुझे अपने सम्बन्ध की सुध है, यद्यपि मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं।

धनी एती भी आसा न रही, जो करूं तुमसों बात।
ना बात तुमारी सुन सकों, न देखूं तुमें साख्यात।। ३२ ।।

हे धनी! मेरी इतनी आशा नहीं रही कि मैं आपसे बातें करूं या आपकी बात सुन सकूं या आपके साक्षात् दर्शन कर सकूं।

एह धनी एह घर सुख, सनमंध दियो भुलाए।
लगाव न रह्यो एक रंचक, ताथें मेरो कछू न बसाए।। ३३ ।।

आप मेरे धनी और यह परमधाम मेरे सुखों का घर है। खेल ने सारा सम्बन्ध भुला दिया और थोड़ा सा भी लगाव नहीं रखा, इसलिए अब मेरा कुछ वश नहीं चलता।

कहा करूं किन सों कहूं, ना जागा कित जाऊं।
एता भी तुम दृढ़ कर दिया, तुम बिना न कित ठांऊ।। ३४ ।।

अब मैं क्या करूं? किससे कहूं? कहां जाऊं? कोई ठिकाना नहीं है, क्योंकि आपने यह निश्चित करा दिया है कि आपके चरणों के बिना कोई ठिकाना नहीं है।

न कछू एता बल दिया, जो लगी रहूं पिउ चरन।
पर ए सब हाथ खसम के, और पुकारूं आगे किन।। ३५ ।।

आपने इतनी भी ताकत नहीं दी कि मैं आपके चरणों को ही पकड़े रहूं। हे धनी! यह सब आपके हाथ में है तो अब मैं किसके आगे जाकर पुकारूं?

रोई तो भी जाहेर, पुकारी जोस खुमार।
जो देते रंचक बातूनी, तो होती खबरदार।। ३६ ।।

यदि मैं यहां रोती हूं तो मेरा राज़ खुल जाता है और यदि आपके विरह के जोश से पुकारती हूं तो बेहोश हो जाती हूं। यदि आप थोड़ा सा भी रहस्य जाहिर कर देते तो मैं सावचेत (सावधान) हो जाती।

अब केहेना तो भी तुमको, ठौर तो भी तुम।
अंगना तो भी धनी की, तुम हो धनी खसम।। ३७ ।।

हे धनी! अब जो कुछ कहना है वह तुमसे और ठिकाना आपके चरण कमल हैं। मैं आपकी अंगना हूं और आप मेरे पति हैं।

आसा उमेद धनी की, बल बुध ठौर धनी।
पिंड न रह्यो ब्रह्मांड, तुम ही में रही करनी।। ३८ ।।

मेरी आशा (उम्मीद) आप ही हैं तथा मेरा बल, बुद्धि और ठिकाना सब आप हैं। मेरे लिए पिण्ड और ब्रह्माण्ड कुछ नहीं है। सारी करनी आपके लिए है।

Nijanand App

जोर कर जुदागी कर दई, और जोर कर जगावत तुम।
केहेनी सुननी मेरे कछू ना रही, तो क्यों बोलूं मैं खसम।। ३९ ।।

आपने बल से जुदा कर दिया और जोर लगाकर अब जगा भी रहे हो। मेरे में कुछ कहने-सुनने की ताकत नहीं है, तो हे धनी! मैं कैसे बोलूं?

ऐसे कायम सुख के जो धनी, किन विध दई भुलाए।
इन दुख में देखावत ए सुख, हिरदे तुम ही चढ़ाए।। ४० ।।

ऐसे अखण्ड सुख को देने वाले आप मेरे धनी हो, तो आपने मुझे कैसे भुला दिया? इस संसार में बिठाकर अखण्ड सुख दिखाते हो मेरे हृदय में केवल आप ही हैं।

ऐसे सुख अलेखे अखंड, भुलाए दिए माहें खिन।
सुख देखत उनथें अधिक, पर आवे अग्याएं अंतस्करन।। ४१ ।।

ऐसे बेशुमार अखण्ड सुखों को एक पल में भुला दिया। अब उससे भी अधिक सुख देख रही हूं, परन्तु वह आपकी आज्ञा से ही अन्तःकरण में आएंगे।

खेल किया हुकम सों, हम आए हुकम।
हुकमें दरसन देखावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४२ ।।

यह खेल आपके हुकम से बना है और आपके हुकम से ही हम खेल देखने आए हैं। आपके हुकम से ही दर्शन होंगे। आपके हुकम के बिना यहां कुछ है ही नहीं।

हुकमें इस्क आवहीं, कदमों जगावे हुकम।
करनी हुकम करावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४३ ।।

आपके हुकम से ही इश्क मिलेगा जिससे आपके चरणों में जागकर खड़े होंगे। आपके हुकम से हम यहां करनी करते हैं। आपके हुकम के बिना कुछ नहीं है।

हुकम उठावे हंसते, रोते उठावे हुकम।
हार जीत दुख सुख हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४४ ।।

आपके हुकम से ही हम हंसते उठेंगे और आपके हुकम से ही रोते उठेंगे। हार-जीत, दुख-सुख सब आपके हुकम से ही होता है। आपके हुकम के बिना और कुछ नहीं है।

हुआ है सब हुकमें, होत है हुकम।
होसी सब कछू हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४५ ।।

जो कुछ हुआ है सब हुकम से हुआ है। जो हो रहा है या आगे होगा, सब हुकम से ही होगा। धनी आपके हुकम के बिना और कुछ नहीं है।

अब ज्यों जानो त्यों करो, कछू रह्या न हमपना हम।
इन झूठी जिमी में बैठ के, कहा कहूं तुमें खसम।। ४६ ।।

हे धनी! अब जैसा चाहो वैसा करो। हमारे अन्दर हमारा अपनापन (अंह) नहीं रह गया। अब इस झूठी जमीन में बैठकर, हे धनी! मैं आपसे क्या कहूं?

ए भी दृढ़ तुम कर दिया, सब कछू हाथ हुकम।
कछू मेरा मुझ में ना रह्या, तातें कहा कहूं खसम।। ४७ ।।

यह भी आपने दृढ़ कर दिया है कि सभी कुछ आपके हुकम के हाथ में है। मेरे में मैं-पना (स्वाभिमान) नहीं रह गया, तो अब मैं आपसे क्या कहूं?

Nijanand App

जो कहूं कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम।
जब कछू तुम हीं करोगे, तब केहेसी आए हम।।४८।।

मैं करोड़ों बार भी कहूं तो इतना ही कहना है कि जब आप कृपा करोगे तो आपके सामने आकर हम आपसे बात करेंगे।

अब तो केहेना कछू ना रह्या, ऐसी अंतराए करी खसम।
जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम।।४९।।

अब तो कहने को कुछ रहा ही नहीं, ऐसी जुदाई आपने करदी है। आप ही जागृत करके बिठाओगे तब हम आकर कहेंगे।

हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम।
सो तो कछुए ना रह्या, अब कहा कहूं खसम।।५०।।

हमारे अन्दर यदि कुछ बात होती तो तुम्हारे आगे मैं रोती। अब ऐसा तो कुछ रहा ही नहीं, तो अब मैं क्या कहूं?

भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए।
जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए।।५१।।

मैंने संसार में आकर जो अच्छा समझा, वह किया। अब आप ही कुछ दिलासा दोगे तो आशा लेकर आप से कहूंगी।

तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास।
ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वांस।।५२।।

तुमने हमारे वास्ते ही यह खेल बनाया होगा, लेकिन यह माया का संसार निराशा से भरा है। ऐसी निराशा दिल में आने के बाद यह लगता है कि मैं जिन्दा क्यों हूं?

एक आह स्वांस क्यों ना उड़े, सो भी हुआ हाथ धनी।
बात कही सो भी एक है, जो कहूं इनथें कोट गुनी।।५३।।

एक ठण्डी आह भरने से सांस निकल जानी चाहिए, परन्तु वह भी आपके हाथ होने से नहीं निकली बात भी कही तो एक ही, चाहे मुख से करोड़ों बार कह लूं।

महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल।।५४।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं शर्मिन्दी हूं, क्योंकि मैं सब अवसरों पर भूल गई, इसलिए मुझे लज्जा आती है। अब कैसे कहूं कि इस जुदाई को दूरकर अपने सामने बुलाओ।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५४ ॥

मैं खुदी काढ़े का इलाज

हम लिए कौल खुदाए के, हक के जो परवान।
लई कई किताबें साहेदियां, कई हदीसें फुरमान।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हमने पारब्रह्म के वचनों को ग्रहण करके उनका पालन किया। कई धर्म ग्रन्थों, कुरान और हदीसों से गवाहियां लीं।

Nijanand App